अक़ाएद उल्माए देवबन्द

-: मुसन्निफ:-

जलालतुल इल्म उस्ताजुल उल्मा हाफिजे मिल्लत

शाह अब्दुल अजीज

अलैहिर्रहमा वर्रिदवान बानी

अर्बिक युनिवर्सिटी अलजामेअतुल अशरफिया मुबारकपुर

-: मुतर्जिम :-

जानशीने मोहसिने मिल्लत

मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूलयतामा,

रायपुर (छ ग)

-: शायकरदा :-

मोहसिने मिल्लत एकेडमी,

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा

रायपुर (छ ग) 492001

फोन : 2535283

नाम किताब :- अकाएद उल्माए देवबंद

मुसन्निफ :- जलालतुल इल्म उस्ताजुल उल्मा हाफिजे मिल्लत शाह अब्दुल अजीज अलैहिर्रहमा बानी अर्बिक युनिवर्सिटी अलजामेअतुल अशरफिया मुबारकपुर जिला आजमगढ़

मुतर्जिम :- जानशीने मोहसिने मिल्लत मौलाना मोहम्मद अली फारूकी,

प्रूफ रीडर :- मोहम्मद सुल्तान कादरी,पण्डरीपानी मोहम्मद अमीर बेग कादरी झलप

शायकरदा :- मोहसिने मिल्लत एकैडमी,मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर छ ग

दूसरी बार :- 5000

कीमत :-

मोहसिने मिल्लत एकैडमी की हिन्दी में तारीखसाज किताबें

1 जलजला :-अज-अल्लामा अर्शदुल कादरी
हिन्दी-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

2 पंज सूरह रजविया :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

3 तबलीगी :-अज अल्लमा अर्शदुल कादरी
हिन्दी-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

4 आशिके रसूल(इमाम अहमद रजा) :-अज प्रोफेसर मसउद अहमद सा, पाकिस्तान
हिन्दी मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

5 पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

6 ताजदारे छत्तीसगढ़ :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

7 कुत्बे राजगांगपुर :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

8 ताजुल औलिया :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

9 रायपुर की बहार (बंजारी वाले बाबा):-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

10 तजकिर ए बर्हाने मिल्लत :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

11 इस्लाम और मोआशिरा :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

12 तबलीगी जमात और इस्लाम :-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

13 बाबरी मस्जिद(तारीख के आईना में)-मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

दो बातें

जलालतुल इल्म उस्ताजुल उलमा हाफीजे मिल्लत हजरत अल्लामा शाह हाफीज अब्दुल अजीज अलैयर्हिरहमा मुबारकपुर आजमगढ़ यू.पी. चौदहवीं सदी हिजरी की एक ऐसी अजीम और तारीख साज शख्सियत का नाम है जिनके दम कदम से दीन और इल्मेदीन का भरम कायम है। हाफीजे मिल्लत एकजहां कमालात शख्सियत का नाम है। बहुत सारे खूबियों के मालिक हाफिजे मिल्लत अलैहिर्रहमा की जिंदगी का अजीम कारनामा अल्जामी अतुल अशरफीया की तामीर है। जिसने तिशनगाने उलूमे नबूया को सैराब करके जज्ब ए कुरबानी अता किया और मदारिसे इस्लामिया को काम करने का सलीका अता किया और जमीन के ऊपर काम जमीन के नीचे आराम का सिला अता किया हाफीजे मिल्लत की हयातो खिदमात का हर मैदान तवील जुसतजु चाहता है। आपकी मशहूर किताब अलमीसबाहुल जदीद अकाईदे उल्मा देववंद जो आप के हाथों में है हाफीजे मिल्लत ने इस किताब के जरिए उल्माए देवबंद के अकाइद को जाहीर करने और उम्मते मुस्लिमा को उनके मकरो फ्रेब से महफूज रखने की कोशिश की है और हाफीजे मिल्लत ने जिस आसान लबो लहजा और हुसने उसलूबी का ख्याल करते हुए इस किताब को लिखा है कि जिसे पढ़कर इंसानी जिंदगी में इंकलाब आ जाता है और दिल की दुनिया बदल जाती है और दिल पर ऐसा असर होता है बकौल जानशीने मोहसिने मिल्लत ऐसा मालूम होता है कि जैसे हर सतर पर कोई मोअल्कील बैठा है हाफीजे मिल्लत की इस तसनीफ को देखने के बाद ये कहना ही पड़ता है के हजरत ने समुंदर को कोजे में बंद कर दिया है हजरत का ये अदना कमाल था जिसकी जीती जागती तस्वीर अकाईदे उल्माए देवबंद है।

मोहिब्बाने अहले सुन्नत – आज हर बातील से बातील मजहब अपने मजहब की नशरो ईशाअत में हर मुमकीन कोशिश कर रहा है और मोखालेफीन इस्लाम को नेस्तो नाबूद करने के

सुन्नत की तसानीफ बेहतरीन आला है। इस लिए मोहसिने मिल्लत अकेडमी बानिए मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन गुले गुलजारे फारूकीयत खलीफए आला हजरत मोहसिने मिल्लत हजरत मौलाना हामिद अली साहब फारूकी रहमतुल्ला अलैह के मिशन को लेकर के आगे बढ़ रही है जिसके तहत अब तक कई किताबें मजरे आम पर आ चुकी है और हसबे जररूत नई तसानीफ भी पेश करता रहेगा जिसकी सरपरस्ती पीरे तरीकत रहबरे शरीयत जानशीने मोहसिने मिल्लत हजरत मुफ्ती मोहम्मद अली फारूकी साहब किबला फरमा रहे हैं जो हाफीजे मिल्लत के इस कौल के जमीन के ऊपर काम जमीन के नीचे आराम की अमली तफसीर बनकर मुकम्मल जांफीशानी और मेहनतो मुशक्कत के साथ अल्लामा अरशदुल कादरी की मशहूरे जमाना किताब जलजला : तब्लीगी जमात : प्रोफेसर मसुद अहमद साहब पाकिस्तान की मशहूर किताब आशिके रसूल इमाम अहमद रजा सरकारे आला हजरत का तरजुमा ऐ कुरआन पंज सुरह रिजवीया वगैरह को हिंदी में लाकर उर्दू से दूर लोगों के दिलों में इस्लामी चेराग रौशन करने का जो प्रोग्राम बनाया वो एक तारीख साज कदम है : इसलिए बेरादराने अहले सुन्नत से गुजारिश है के जानशीने मोहसिने मिल्लत के कलम से सरकार हाफीजे मिल्लत की मशहूर किताब (अकाइदे उल्माए देवबंद) जो आपके सामने है जिसे आप खुद पढ़ें और अपने दोस्तो अहबाब को पढ़ने की तरगीब दिलाएं। ताकि हक और बातील को पहचाना जा सके।

दुआओं का तालिब
मौलाना साजिद हुसैन मिस्बाही
सदर मुदर्रिस मदरसा हाजा
रायपुर छ–ग

जरूरी गुजारिश

बिरादराने इस्लाम की खिदमत में खुलूस के साथ गुजारिश है कि इस मुख्तसर रिसाला को अव्वल से आखिर तक दिल से बगौर पढ़ें। तअस्सुब और तरफदारी शख्सियत परस्ती को अलाहेदा रखें। इमानदारी और हक परस्ती को काम में लाएं और अपने इमानों इंसाफ से फैसला करें इन्शाअल्लाह तआला कवी उम्मीद है कि हक आफताब से ज्यादा वाजेह हो जाएगा। मुसलमानों के दिलों में अगर उस मदनी ताजदार हबीबे किरदेगार जनाब मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहिवसल्लम की सच्ची मोहब्बत हो तो जरुर उनका जमीर ही बता देगा कि उल्माए देवबंद अपने इन अकवाल की बिना पर इस्लामी नुक्तए नजर से कौन है और किस हुक्म में दाखिल है।

नोटः इस रेसाले में तमाम सवालों का जवाब देवबंदी मजहब पर दिया गया है। हर जवाब का हवाला उल्माए देवबंद की किताबों में दर्ज किया है। अपनी तरफ से कुछ नहीं लिखा अलबत्ता फायदा और तंबीह के तौर पर कहीं-कहीं उन्ही के कौल की वज़ाहत कर दी है हवाला में उल्माए देवबंद की किताबों से जो इबारतें नकल की हैं वे बिल्कुल अस्ल के मुताबिक है। एक इबारत भी गलत साबित कर देने पर पांच सौ रुपया इनाम।

खाकसार - हाफिज अब्दुर्रशीद दुकानदार
कस्बा भोजपुर- जिला मुरादाबाद (यू पी)

नहमदोहू वनुसल्ली अला हबीबेहिल करीम

मुकर्रम व मोअज्जम जनाब मौलवी साहब अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह

हम लोग अब तक उल्माए देवबंद के मुतअल्लिक यही सुना करते थे कि वो बहुत बड़े पाबंदे शरीअत मुत्तबए सुन्नत, मुत्तकी, परहेजगार हैं। शिर्को बिदअत से बचाने के लिए तबलीग वो हिदायत करते हैं। निज उनके जाहिरी तर्जे अमल से भी उनका तकद्दुस मालूम होता है। अपने वाजों और तकरीरों में नबी-ए-करीम अलैहिस्सालातो वस्सलाम की तारीफ भी करते हैं। इन सब बातों से पता चलता है कि उल्माए देवबंद बड़े खुश अकीदा निहायत मुत्तबए सुन्नत, आमिले शरीअत और जनाबे मोहम्मदुर्रसुलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के शैदाई और फिदाई और हुजूर से मोहब्बत रखने वाले हैं।

मगर जैद कहता है कि उल्माए देवबंद की ये सब बातें नुमाईशी हैं। उनका जाहिरी तर्जे अमल जैसा भी हो लेकिन उनके अकाएद जरूर खेलाफे हक और खेलाफे शरआ और मोहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी से मिलते हुए हैं। वो लोग हुजूर सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की तारीफ महज इसलिए करते हैं कि मुसलमानों को अपनी तरफ मुतवज्जे रखें। मुसलमानों में अपना एज़ाज व इकतेदार काएम करें। वरना हकीकत में उन को नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत हरगिज़ नहीं। उल्माए देवबंद ने तो नबीं करीम सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम की शाने अकदस में सख्त गुस्ताखियां की हैं। अपनी किताबों में हुजूर के इल्म को शैतान मर्दूद के इल्म से कम बताया है। उम्मती के नबी से अमल में बढ़ जाने के काएल हैं। इसी किस्म के उनके बहुत से अकवाल उन्हीं की किताबों में मौजूद हैं जिनका कुफ्र होना आफताब की तरह रौशन है। अगर उनको वाकई नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम से मोहब्बत होती तो ऐसी गंदी इबारतें अपनी किताबों में हरगिज़ नहीं लिखते और अगर गलती से ऐसा हुआ भी था तो तौबा कर लेते। मगर न तो तौबा की। न वो गंदी न इबारतें अपनी किताबों से दूर की बल्कि मुद्दतों से छाप छाप कर इशाअत कर रहे हैं। इससे साफ जाहिर है कि उनकी ये जाहेरी बातें तर्जे अमल और अपने वाजों में हुजूरे अकरम की तारीफ करना इमेज नुमाइशी और किसी गर्ज पर मबनी है। अगर हकीकी मोहब्बत होती तो ऐसी किताबों की बजाए छपवाने और इशाअत करने के जला देते और तौबा कर लेते। जैद के इस बयान से हमें सख्त हैरत और निहायत तअज्जुब है हम उल्माए देवबंद के जाहेरी तकद्दुस को देखते हैं और उनकी बातें सुनते हैं तो ये मालूम

होता है कि ऐसी बातें अपनी किताबों में हरगीज नहीं लिख सकते। मगर जैद बावजूद मोतबर और दयानतदार होने के कहता है कि जो बातें मैने बयान की है अगर वो उल्माए देवबंद कि किताबों में न हो तो मैं सख्त मुजरिम और इन्तेहाई सजा का मुस्तहिक बल्कि इन बातों को गलत साबित कर देनें पर पांच सौ रुपया इनाम देने का हतमी वादा करता है। लेहाजा इसको भी झूठा नहीं कहा जा सकता जैद ने जो बातें उल्माए देवबंद के मुतअल्लिक बयान की हैं। अगर वो वाकेई उनकी किताबों में है तो हम लोग जरूर उनसें कतअ तअल्लुक रखेंगे और दूसरे मुसलमानों को भी इस बात पर आमादा करेंगे और अगर जैद का ये बयान गलत है और ये बातें उल्माए देवबंद की किताबों में नहीं हैं तो जैद को बेरादरी और पंचायत की रू से सख्त सजा देंगे। और उसके वादा के मुताबिक पांच सौ रुपया भी उससे वसूल करेंगे। लेहाजा उसकी तहकीक के लिए जैद के बयान से तीस सवाल काएम करके हाजिरे खिदमत करते हैं। उम्मीद के हर सवाल का जवाब नम्बरवार उल्माए देवबंद ही की किताबों के हवाले से आम फहेम तहरीर फरमाया जाए। ताकि मुसलमान बा आसानी समझकर सही नतीजा पर पहुंच सकें।

साएलीन- मुल्ला अब्दुल मजीद पेश इमाम जामा मस्जिद - हकीम अब्दुल मजीद- हाफिज अब्दुल मजीद- मोहम्मद सिद्दीक नम्बरदार- नजीर अहमदचौधरी साकिनान कस्बा भोजपुर जिला- मुरादाबाद। मुकर्रेमान बंदा- व अलैकुमअस्सलाम व रहमतुल्ला। आप हज़रात का मुर्सलह खत जो जैद के बयान औरतीस सवालात पर मुशतमिल है वसूल हुवा। हस्बे फरमाईश हर सवाल काजवाब उल्माए देवबंद ही के मोतबर अकवाल से देता हूं और हर एक क हवाला नम्बरवार उन्हीं किताबों से दर्ज करता हूं। लेकिन पहले इजमालन इतना बता दूं कि जैद का बयान बिल्कुल सही है। वाकेई उल्माए देवबंद कि किताबों में ऐसे बहुत से अकवाल हैं। जिनसे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तौहीन साबित हैं। उनमें से बाज इबारतें जवाबात के हवालों में भी आएंगी। जो इस सबूत के लिए काफी हैं। मौला तआला मुसलमानों को तौफिक दे कि वो अपने नबी जनाबे मोहम्मदुर्रसुलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैह वसल्लम की इज्जत व अजमत को पहचानें और सच्चे दिल से उनकी ताजीम व तौकीर करें।

सवालात व जवाबात हवाला नम्बर के साथ

सवाल नम्बर -1 क्या उल्माए देवबंद के नजदीक खुदा के सिवा कोई और भी मुरब्बी- ए- खलाएक है अगर उन के अकीदा में सिवाए खुदा के कोई दुसरा

भी मुरब्बी-ए-खलाएक हैं तो वो कौन है।

जवाब नम्बर-1 हा उल्माए देवबंद के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही मुरब्बी-ए-खलाएक हैं जैसा कि मौलवी महमूदूल हसन साहब सदर मुदर्रिस मदरसा देवबंद फरमातैं हं।

हवाला नम्बर 1- मर्सिया रशीद अहमद मुसन्निफ मौलिवी महमूदुल हसन सफा 12 पर है।

खुदा उनका मुरब्बी वो मुरब्बी थे खलाएक के।
मेरे मौला मेरे हादी थे, बेशक शेख रब्बानी।।

तंबीहः इस शेर में मौलवी महमूद हसन साहब ने मौलवी रशीद अहमद साहब को मुरब्बी-ए-खलाएक लिखा है जो रब्बुल आलमीन के हम माना है। शायद जरुरते शेरी कि वजह से रब्बुल आलमीन के हम माना है। शायद जरुरते शेरी की वजह से रब्बुल आलमीन नहीं लाए। ये है पेशवाए देवबंद की अकीदतमंदी कितने खुले लफ्जों में अपने पीर को सारी मखलूक का पालने वाला कह रहे हैं। वाकई पीर परस्ती इसी का नाम है।

सवाल नम्बर 2: वो मसीहा कौन है जिसने मुर्दे भी जिलाए और जिन्दो को भी मरने से बचा लिया। क्या उलमाए देवबंद में कोई ऐसा मसीहा हुआ है।

जवाब नम्बर 2:- हां वो मसीहा अहले देवबंद के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही है। चुनानचे मौलवी महमूद हसनसाहब देवबंद उनकी शान में फरमाते हैं और पुकार कर हजरत ईसा अलैहिस्सालम को अपने पीर की मसीहाई दिखाते हैं हवाला मुलाहेजा हो।

हवाला नंबर 2 :- मरसिया रशीद अहमद मुसन्नेफा मौलवी महमूद हसन।

सफा 33। मुर्दों को जिन्दा किया जिन्दो को मरने न दिया।
इस मसीहाई को देखे जरी इब्ने मरयम।।

तबीहः वाकेई देवबंदियों के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब की मसीहाई हजरत ईसा अलैहिस्सलाम से बढ़ गई। क्योंकि जो काम ईसा अलैहिस्सलाम भी न कर सके वो मौलवी रशीद अहमद साहब ने कर दिखाया मुर्दे जिलाने में तो बराबर ही थे मगर जिन्दों को मौत से बचा लिया। इस में जरूर ईसा अलैहिस्सलाम से बढ़ गए। जब ही तो ईसा अलैहिस्सलाम को उनकी मसीहाई दिखाई जाती है। अगर मौलवी रशीद अहमद साहब की मसीहाई हजरत ईसा अलैहिस्सलाम से बढी हुई न जानते तो ये न कहते। इस मसीहाई

को देखे जरी इब्ने मरयम। मुसलमानों इन्साफ करो क्या इसमें हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की तौहीन नहीं है, है और जरूर है।

सवाल 3: क्या किसी इंसान के काले काले बंदे भी यूसूफे सानी हैं। उल्माएदेवबंद के मोतबर अकवाल से जवाब दीजिए।

जवाला नम्बर 3: मौलवी रशीद अहमद साहब के काले काले बंदे युसूफ सानी हैं। चुनानचे उनके खलीफा महमूदुल हसन साहब देवबंदी फरमाते हैं ।हवाला नम्बर 3: मर्सिया रशीद अहमद साहब सफा 11

कुबूलियत इसे कहते हैं मकबूल ऐसे होते हैं।
उबैदे सूद का उनके लकब हैं युसूफे सानी।।

तंबीह: क्या खूब कहा- खुदाए तआला के आला दर्जा के हसीन व जमील बंदायुसूफ अलैहिस्सलाम हैं। मगर मौलवी रशीद अहमद साहब के कालेकाले ही बन्दे यूसुफे सानी बना दिए। गोरे गोरे बंदों का क्या ठिकाना ।वाकेय मकबूलियत इसी कानाम हैं। मुसलमानों, गौर करोगे तो मालूमहो जाएगा कि इस एक ही शेर में खुदा और उसके रसूल दोनों पर हाथसाफ कर दिया।

सवाल नम्बर 4: उल्माए देवबंद के नजदीक बानी - ए-इस्लाम का सानी कौन है।

जवाब नम्बर 4: उल्माए देवबंद मौलवी रशीद अहमद साहब को बानी ए इस्लाम (खुदा) का सानी जानते हैं। जैसा कि महमूद हसन साहब ने लिखा है।

हवाबा नम्बर 4: मर्सिया रशीद अहमद सफा 6

जबां पर अहले अहवा की है क्यों ओलो होबल शायद।
उठा आलम से कोई बानी- ए- इस्लाम का सानी।।

सवाल नम्बर 5: क्या आरिफ लोग काबा शरीफ में पहुंचकर किसी दुसरी जगह को तलाश किया करते हैं। वो कौन सी जगह है। क्या उल्माए देवबंद ने कोई ऐसी जगह बताई है।

जवाब नम्बर 5: हां आरिफ लोग काब-ए-मोअज्जमा जाकर गंगोह तलाश किया करते हैं। जैसा कि मौलवी महमूद हसन साहब देवबंदी फरमाते हैं।

हवाला नम्बर 5: मरसिया रशीद अहमद सफा 13

फिरे थे काबा में भी पूछते गंगोह का रास्ता।
जो रखते अपने सीने में थे जौको शौके इर्फानी।।

तंबीह: काब-ए- मोअज्जमा जो बैतुल्लाह खानए खुदा है। उसमें पहुंचकर भी गंगोह ही की धुन लगी हुई है। उसे देवबंदी इर्फान का नशा और गंगोही मार्फत का

खुमार न कहा जाए तो और क्या है।

सवाल नम्बर 6: दोनों जहां की हाजतें किस से मांगे रूहानी और जिस्मानी हाजतों का किबला कौन है। देवबंदी मजहब पर जवाब दिया जाए।

जवाब नम्बर 6: रूहानी और जिस्मानी सब हाजतों का किबला देवबंदी मौलवी के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही है। सारी हाजतें उन्हीं से तलब करना चाहिए। उनके सिवा कोई हाजत रवा नहीं। जैसा कि मौलवी महमूद हसन साहब देवबंदी फरमाते हैं। देखो हवाला नम्बर 6

हवाला नम्बर 6: मर्सिया रशीद अहमद साहब सफा 10

हवाएज दीनो दुनियां की कहां ले जाएं हम या रब।
गया वो किबला ए हाजाते रुहानी व जिस्मानी।।

फायदा: मौलवी रशीद अहमद साहब ने गैरुल्लाह से मदद मांगने को शिर्क बताया है। फतावए रशीदिया तीसरा हिस्सा सफा 6 पर है। सो गैरुल्लाह से मांगना अगरचे वली हो या नबी शिर्क है और मौलवी महमूद हसन साहब दोनो जहां की हाजते उन्हीं से मांग रहे हैं। किबलए हाजात उन्हीं को कह रहे हैं। लेहाजा फतावए रशीदिया के हुक्म से मौलवी महमूद हसन साहब मुशरिक हुए और अगर मौलवी महमूद हसन साहब को मवहिद कहा जाए तो मौलवी रशीद अहमद साहब को जरुर खुदा कहना पड़ेगा बोलो क्या कहते हो।

सवाल नम्बर 7: बिला इस्तिस्ना सारे जहां का मखदूम कौन है और सारा आलम किस की इताअत करता है उल्माए देवबंद के मजहब पर जवाब दिया जाए।

जवाब नम्बर 7: सारे आलम के मखदूम देवबंदियों के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही है और सारा आलाम उन्हीं कीइताअत करता है। हवाला मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 7: मर्सिया रशीद अहमद साहब मुसन्नेफा मौलवी महमूद हसन साहब के पहले ही सफा पर है। मखदूमूलकुल मताउल आलम जनाब मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही।

सवाल नम्बर 8: वो कौन हाकिम है जिस का कोई हुक्म भी उल्माए देवबंद के नजदीक टल नहीं सकता और उसका हर हुक्म कजाए मुबरम है।

जवाब नम्बर 8: ऐसे हाकीम तो सिर्फ मौलवी रशीद अहमद साहब ही है। उनका कोई हुक्म कभी नहीं टला। इसलिए के उनका हर हुक्म कजाए मुबरम की तलवार है।

हवाला नम्बर 8: मर्सिया रशीद अहमद सफा 31

न रुका पर न रुका पर न रुका पर न रुका।
उसका जो हुक्म था था सैफे कजाए मुबरम।।

फायदा: वाकई कोई हुक्म नहीं टला और टलता कैसे मुरब्बी-ए-खलाएक थे। कोई मजाक थे और अकीदतमंद लोगों ने किसी हुक्म को टलने भी न दिया। इससे ज्यादा अकीदतमंदी और क्या होगी कि जब मौलवी रशीद अहमद साहब ने कव्वे खाने का हुक्म दिया तो उल्माए देवबंद ने ये समझकर कि मुरब्बी-ए-खलाएक का हुक्म है आंख बंद करके तसलीम कर दिया और कव्वे खाने लगे।

सवाल नम्बर 9 : वो कौन है जिसकी गुलामी का दाग देवबंदी मजहब में मुसलमानी का तमगा है।

जवाब नम्बर 9: वो मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही है। उन्हीं की गुलामी मुसलमानी का तमगा है। चुनानचे मौलवी महमूद हसन साहब फरमाते हैं।

हवाला नम्बर 9: मर्सिया रशीद अहमद सफा 6

जमाना ने दिया इस्लाम को दाग उसकी फुर्कत का।
के था दागे गुलामी जिसका तमगाए मुसलमानी।।

तंबीह: मौलवी रशीद अहमद साहब की गुलामी का दाग जब मुसलमानी का तमगा हुवा। तो जो उनका गुलाम बना उसी को ये तमगा मिला। और जिसने उनकी गुलामी न की। उस तमगा से महरूम रहा। लेहाजा देवबंदी या तो तमाम सहाबा व ताबेईन व अइम्म-ए-मुजतहेदीन व औलिया ए कामेलीन को मौलवी रशीद अहमद साहब का गुलाम मानते होंगे या इन तमाम मकबूलाने खुदा को मुसलमानों के तमगे से खाली जानते हैं।

सवाल नम्बर 10: क्या कोई ऐसा शख्स भी हुआ है जो अकेला ही सिद्दिक और फारूक दोनो हो।

जवाब नम्बर 10: हां मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही सिद्दीक और फारूक दोनों थे चुनानचे मौलवी महमूद हसन साहब उनकी शान में तहरीर फरमाते हैं।

हवाला नम्बर 10: मर्सिया रशीद अहमद सफा 16

वो थे सिद्दीक और फारुक, फिर कहिए अजब क्या है।
शहादत ने तहज्जुद में कदमबोसी की गर ठानी।।

फायदा: इन दस सवालों के जवाबात मौलवी महमूद हसन साहब सदर मुदर्रिस मदरसा देवबंद की किताब मर्सिया रशीद अहमद के हवाले से लिखे है। एक हवाला भी गलत साबित कर दने पर मुबलग पांच सौ रुपया इनाम। मुसलमानोंजरा तअस्सुब और हटधर्मी छोड़कर गौर से पढ़ो और नजरे इंसाफ से देखो तो हक व बातिल आफताब से ज्यादा रौशन हो जाएगा कि मुशरिक रखते हैं अपने पीरों को मुरब्बिए खलाएक मानते हैं। बानी ए इस्लाम का सानी जानते हैं। यानी दुसरा खुदा। मसीहाई में हजरत ईसा अलैहिस्सलाम से बढ़ाते हैं। काबा में पहुंचकर भी पीर ही का दर गंगोह तलाश करते हैं बिला तखसीस सारे जहां को उन का खादिम और मोतीइ जानते हैं उनकी हुकूमत मिस्ले खुदा मानते हैं। अपने पीर की गुलामी को मुसलमानी का तमगा बताते हैं। मुसलमानों। लिल्लाह इन्साफ करो। सच सच बताओ और बिला रेआयत कहो। जो लोग अपने पीरों से ऐसा अकीदा रखते हैं वो हक परसत हैं या पीर परस्त। मवहिद है या मुशरिक।

सवाल नम्बर 11: क्या रहमतुल्लिआलमीन नबीएकरीम सल्लल्लाहो अलैहेवसल्लम ही हैं या उल्माए देवबंद के नजदीक उम्मती को भी रहमतुल्लिलआलमीन कह सकते हैं।

जवाब नम्बर 11: रमतुल्लिलआलमीन हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की सिफते मखसूसा नहीं बल्के उल्माए रब्बानीयीन (उल्माए देवबंद) को भी रहमतुल्लिलआलमीन कहना जाएज हैं। चुनानचे उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब अपने फतावा में तहरीर फरमाते हैं मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 11: फतवाए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 12 लफ्ज रहमतुल्लिआलमीन सिफते खासा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नहीं है। बल्कि दिगर औलिया व अम्बिया और उल्माए रब्बानियीन (उल्माए देवबंद) भी बमौजिब रहमते आलम होते हैं। अगरचे जनाबे रसुलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सब में आला है। लेहाजा अगर दूसरे पर इस लफ्ज को बता वील बोल देवें तो जाएज है। फकत बंदा रशीद अहमद गंगोही अफी अन्हो।

फाएदा: उल्माए देवबंद के नजदीक चूंकी मौलवी रशीद अहमद साहब आलिमे रब्बानी हैं और उनका हुक्म है कि आलिमे रब्बानी को रहमतुल्लिलआलमीन कहना दुरूस्त है। लेहाजा उल्माए देवबंद के नजदीक मौलवी रशीद अहमद साहब ने अपनी रहमत के बहुत से जलवे दिखाए। जिनमे से एक खुसूसियत

के साथ काबिले जिक्र है। वो ये कि आपने कव्वा खाने पर सवाब मुकर्रर कर दिया है। ये वे पैसे और बगैर दाम मुफ्त का सियाह मुर्ग मौलवी रशीद अहमद साहब ने हलाल फरमाकर उसके खाने वाले के लिए सवाल भी मुकर्रर कर दिया है। इससे ज्यादा देवबंदियों के लिए और क्या रहमत होगी कि पैसा लगे न कौड़ी। मुफ्त में सालन का सालन और सवाब का सवाब देखो नम्बर 20।

सवाल नम्बर 12: उल्माए देवबंद के नजदीक इमाम हुसैन रदीअल्लाहो तआला अन्हो का मरसिहा लिखना कैसा है।

जवाब नम्बर 12: लिखना तो दर किनार अगर लिखा हुवा भी मिल जाए तो जला देना या जमीन में दफन कर देना जरूरी है हवाला मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 12: फतावए रशीदिया हिस्सा तीसरा शफा 103

सवाल - मर्सिया जो ताजिया वगैरा में शहीदाने करबला के पढ़ते हैं अगर किसी शख्स के पास हो। वो दूर करना चाहे तो उनका जला देना मुनासिब है या फरोख्त करना। फकत।

अलजवाब : उनका जला देना या जमीन में दफन करना जरूरी है। फकता।

तंबीह: मुसलमानों जरा गौर करे इमाम हुसैन रदिअल्लाहो तआला अन्हो के मर्सिया को तो जलना और जमीन में दफन करना जरूरी है मगर खुद मौलवी रशीद अहमद साहब का मर्सिया लिखना दूरूस्त है।

सवाल नम्बर 13: उल्माए देवबंद का मर्सिया लिखना कैसा और अगर लिखा हुवा मिल जाए तो शहीदाने करबला के मर्सिये की तरह उसको भी जला देना और जमीन में दफन करना जरूरी है या नहीं।

जवाब नम्बर 13: उल्माए देवबंद का मर्सिया लिखना बिला करहिय्यत जाएज है। शहीदाने करबला रदिअल्लाहो अन्हुम के मर्सियो की तरह उसको भी जलना या जमीन में दफन करना नहीं चाहिए।

हवाला नम्बर 13: क्यों कि देवबंदियों के पेशवा मौलवी महमूद हसन साहब ने अपने पीर मौलवी रशीद अहमद साहब का मर्सिया लिखा और छापकर शआए किया। मुद्दते दराज से हजारों की तादाद में छप कर फरोख्त हो रहा है और आज तक किसी देवबंदी मौलवी ने रशीद अहमद के मर्सियो को जलाने या जमीन में दफन करने का फतवा शाए नहीं किया। लेहाजा साबित हुवा कि देवबंदियों के नजदीक उल्माए देवबंद का मरसिया लिखना बिला कराहिय्यत दुरूस्त और जाएज है शहीदाने करबला के मर्सिया की तरह उसको जलाने या

दफन करने का हुक्म नहीं। अकीदतमंदी इसी का नाम है।

सवाल नम्बर 14: माहे मोहर्रम में जिक्रे शहादते इमामे हुसैन रदिअल्लाहो तआला अन्हो सही रेवायत के साथ बयान करना, सबील लगाना, चन्दा सबील में देना, शर्बत या दूधबच्चों को पिलाना दुरुस्त है या नहीं देवबंदी मजहब में इन सब बातों का क्या हुक्म है।

जवाब नम्बर 14: सही रेवायत के साथ भी मोहर्रम में शहादते इमामे हुसैन रदिअल्लाहो तआला अन्हो का जिक्र करना देवबंदी मजहब में हराम है। सबील लगाना, चंदा सबील में देना शर्बत में देना, बच्चों को दूध पिलाना सब हराम है। जैसा की मौलवी रशीद अहमद साहब फरमाते हैं।

हवाला नम्बर 14: फतावए रशीदिया तीसरा हिस्सा सफा 114 मोहर्रम में जिक्र शहादते हसनैन अलैहेमुस्सलाम करना अगर चे बरेवायते सही हो या सबील लगाना, शर्बत पिलाना, चन्दा सबील और शर्बत में देना या दूथ पिलाना सब ना दुरूस्त और तश्बीहे रवाफिज (शिया से मुशबेहत) की वजह सेहराम है। फकत।

तंबीह: मुसलमानों जरा गौर से सुनो। ये तो सब हराम। मगर होली, दिवाली कि कुफ्फार के आतिश परस्ती के दिन है वो उसकी खुशी में जो चीजें मुसलमानों के यहां भेजे वो सब दुरूस्त है मुलाहेजा हो।

सवाल नम्बर 15: हिन्दु अपने त्यौहार होली या दीवाली वगैरा में पुड़िया कुछ खाना बतौरे तोहफा मुसलमानों को दें तो इस का लेना और खाना दुरूस्त है या मोहर्रम के शर्बत और दुध वगैरा की तरह उल्माए देवबंद के नजदीक ये भी हराम है।

जवाब नम्बर 15: होली या दीवाली का येह तोहफा हिन्दुओं से लेना और उसका खाना दुरूस्त है। मोहर्रम के शर्बत और दुध की तरह उल्माए देवबंध के नजदीक ये हराम नहीं। फतवाए रशीदिया में इसको दुरूस्त लिखा है। मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 15: फतावए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 107 मसअला। हिन्दु त्यौहार होली या दीवाली में अपने उस्ताद या हाकिम या नौकर को खीरें या पुरी या और कुछ खाना बतौरे तोहफा भेजते हैं। इन चीजों का लेना और खाना उस्ताद वो हाकिम वो नौकर मुसलमानों को दुरूस्त हैं या नहीं।

अलजवाब: दुरूस्त है। फकत।

तंबीह: मुसलमानों। गौर करो। उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब बावजूदे कि मोहर्रम के शर्बत दूध वगैरा सब को हराम बता रहे हैं। मगर होली और दीवाली से ऐसा खास तअल्लुक है कि उसके हर खाने को जाएज और दूरूस्त फरमा रहे हैं। इसी का नाम है अकीदत-हजरत इमामे हुसैन रदेअल्लाहो अन्हो की तरफ जो चीज मंसूब हो जाए वो तो ना दूरूस्त और हराम हो जाए मगर होली दीवाली की तरफ निस्बत करने से कोई खराबी न आए। जाएज और दुरुस्त ही रहे। जब निस्बत दोनों जगह मौजूद है तो होली के हर खाने को जाएज और दुरूस्त कहना और मोहर्रम के शर्बत और दूध को भी हराम बताना या तो होली दीवाली की अकीदत का नशा है या हजरते इमामे हुसैन रदिअल्लाहो अन्हो से नफरत का गलबा है।

बवक्त सुबह शबद हमचू रोज मालूमत।
के बाके बाख्तए इश्क दर शबे दैजूर।।

सवाल नम्बर 16: जो शख्स सहाब एकेराम रिजवानुल्लाहे अलैहिम अजमईन को काफिर कहे वोह उल्माए देवबंद के नजदीक सुन्नत जमात सेखारिज होगा या नहीं।

जवाब नम्बर 16: सहाबा को काफिर कहने वाला उल्माए देवबंद के नजदीक सुन्नतो जमात से खारिज नहीं। जैसा कि फतावए रशीदिया में है।

हवाला नम्बर 16: फतावए रशीदिया हिस्सा दुसरा सफा 11 जो शख्स सहब-ए-केराम में से किसी की तकफीर करे वो मलउन है ऐसे शख्स को इमाम मस्जिद बनाना हराम है और वो अपने इस कबीरा के सबब सुन्नत जमाअत से खारिज न होगा।

तंबीह: फतवों की मुस्तनद किताबों में अइम्मा तो ये तसरीह फरमाएं कि ऐसा शख्स अहले सुन्नत से खारिज बल्के हजरते अबूबक्र सिद्दीक व उमरे फारूक की शान में तबर्रा करने वाले को फुकहाए केराम ने काफिर लिखा। मगर गंगोही साहब के नजदीक ऐसा शख्स तबर्रा करने के बाद भी सुन्नी ही रहता है। बाज अकीदतमंद तरफदारी में ये कहा करतें हैं कि ये किताबत की गलती है होगा कि जगह न होगा लिख दिया है। मगर ये महेज गलत है। इसलिए की गलती होती तो एक छापा में होती। दो में होती। हर किताब में हर छापा में यही इबारत है अलावा इसके इस से दो ही सतर पहले सफा 10 पर खुद मौलवी रशीद अहमद साहब लिख चुके हैं कि जो शख्स हजरते सहाबा की बेअदबी

करे वो फासिक है। फकत और जाहिर बात है कि सिर्फ फासिक होने से सुन्नत जमात खारिज नहीं होता। फिर कातिब की गलती कैसे हो सकती है। मौलवी रशीद अहमद साहब की ये पिछली इबारत पुकार कर कह रही है कि कातिब की गलती हरगिज नहीं बल्के गंगोही साहब का अकीदा ही ऐसा है।

सवाल नम्बर 17: उल्मा की तौहीन व तहकीर करने वाला भी उल्माए देवबंद के नजदीग सुन्नत जमात से खारिज होगा या नहीं ?

जवाब नम्बर 17: उल्मा की तौहीन करने वालों का सुन्नत जमात से होना तो दरकिनार ऐसा शख्स तो उल्माए देवबंद के नजदीक मुसलमान ही नहीं काफिर है। चुनान्चे फतावए रशीदिया में है।

हवाला नम्बर 17: फतावए रशीदिया हिस्सा तीसरा सफा 16 उल्माए की तौहीन व तहकीर को चूंकि उल्मा में कुफ्र लिखा है जो ब वजह अम्र इल्म और दीन के हो।

फाएदा: ये बात काबिले गौर है कि सहाबा की तकफीर करने वाले को काफिर कहना तो बड़ी बात सुन्नत जमात से भी खारिज नहीं करते। जैसा कि हवाला नम्बर 16 में गुजरा और उल्मा की तौहीन करने वाले दाएरए इस्लाम से खारिज करके काफिर कहते हैं। आखिर इसमें क्या हिकमत है सिवाए इसके और क्या कहा जा सकता है उसमें अपना बचाव मकसूद है चूंकि खुद आलिम हैं लेहाजा अपनी तौहीन का दरवाजा बंद किया है। सहाबा से क्या मतलब क्या गर्ज। उनकी चाहे कोई कितनी ही बेअदबी करे काफिर कहें अपना क्या बिगड़ता है।

सवाल नम्बर 18: बाज लोग ये कहते हैं कि महफिले मीलाद शरीफ में कयामे ताजीमी होता है और गलत रेवायते पढ़ी जाती है इस वजह से उल्माए देवबंद महफिले मीलाद शरीफ को नाजाएज कहते हैं। वरना और कोई वजह नहीं। लेहाजा सवाल ये है कि ऐसी मजलिसे मिलाद मुंअकिद करना जिसमें सही रेवायतें पढी जाए और कयाम भी न किया जाए और कोई काम भी खेलाफे शरा न हो। ऐसी महफिले मीलाद शरीफ भी उल्माए देवबंद के नजदीक जाएज है या नहीं ?

जवाब नम्बर 18: मजलिसे मीलाद में अगरचे कोई बात खेलाफे शरा नहीं। कयाम भी न हो। रेवायतें सही पढ़ी जाएं तब भी उल्माए देवबंद के नजदीक जाएजा नहीं। इसके सबूत में फतावए रशीदिया का सवाल वोजवाब मुलाहेज़ा हो।

हवाला नम्बर 18: फतावए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 83 सवाल। इनएकादे मजलिसे मीलाद बदुं कयाम व रेवायते सही दुरूस्त है या नहीं। अलजवाब। इनएकादे मजलिसे मौलूद हर हाल नजाएज़ है। तद्दाई अम्रेमन्दूब के वास्ते मना है। फकत वल्लाहो तआला आलम ।

फाएदा: मजलिसे मीलाद को हर हाल में नाजाएज है बताया यानी मुतलकन हराम है उसके जायज होने की कोईसूरत ही नहीं जभी तो कहा हर हाल नाजायज है।जो देवबंदी मौलवी बगैर कयाम के मीलाद शरीफ को जायज कहते हैं। उनको फतावए रशीदिया दिखाओ और पूछो कि तुमने अपने पेशवा मौलवी रशीद अहमद के फतवे के खेलाफ जायजा क्यों कहा। नाजायज कहने वाला कौन है। तुम्हारे नजदीक अगर मौलवी रशीद अहमद साहब का फतवा सही है तो अपना हुक्म बताओ कि

तुमने नाजाएज को जायज कहा और तुम्हारा कौल सही है तो मौलवी रशीद अहमद साहब

पर हुक्म लगाओ कि उन्होंने जायज को नाजायज लिखा है बोलो क्या कहते हो। बात ये है। मुसलमानों को फांसना मकसूद है। जहां जैसा मौका देखा वैसा कह दिया। कुछ भी हो मुसलमान दाम में फसें रहें।

सवाल नम्बर 19 नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए इल्मे गैब मानना कैसा है और ऐसा अकीदा रखने वाले का उल्माए देवबंद के नजदीक क्या हुक्म है।

जवाब नम्बर 19 नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए इल्मे गैब मानना शिर्क है। ऐसा अकीदा रखने वाला उल्माए देवबंद के नजदीक बिला सुब्हा मुशरिक है जैसा कि मौलवी रशीद अहमद साहब फरमाते है।

हवाला नम्बर 19 फतावए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 10 ये अकिदा रखना कि आप को नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम इल्मे गैब था सरीह शिर्क है। फकत

फाएदा मौलवी अशरफ अली थानवी साहब ने अपनी किताब हिफजुल ईमान में हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम के लिए इल्मे

गैब साबित किया है बल्कि थानवी साहब तो

बच्चों पागलों और तमाम जानवरों के लिए इल्मे गैब साबित करते हैं। अब ए देवबंदियों बोलो गंगोही साहब के फतवे से थानवी साहब खुले मुशरिक हैं या नही।

सवाल नम्बर 20 ये मशहूर कव्वा जो

बस्तियों में फिरता है। नजासत भी खाता है उमूमन मुसलमान उसको हराम जानते है मगर हमने सुना हैकि उल्माए देवबंद के नजदीक ये कव्वा हलाल है और उसका खाना जायज है क्या ये बात ठीक है।

जवाब नम्बर 20 देवबंदियों के नजदीक ये कव्वा बिला शुब्हा जायज है बल्कि बाज सुरतों में तो उल्माए देवबंद के नजदीक उस कव्वे का खाना सवाब है फतावऐ रशीदिया का सवाल व जवाब मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 20 फतावऐ रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 145 सवाल। जिस जगह जागे मारूफा को अक्सर हराम जानते हों और खाने वाले को बुरा कहते हों तो ऐसी जगह उस कव्वा खाने वाले को कुछ सवाब होगा। या न सवाब होगा न अजाब-अलजवाब सवाब होगा । फकत

फाएदा-मौलवी रशीद अहमद साहब पेशवाए देवबंद ने तसरीह फरमा दी कि कव्वा खाना सवाब है मगर न मालूम बाज देवबंदी लोग इस सवाब से क्यूं महरूम हैं और ये मुफ्त का सवाब क्यों छोडे हुए हैं। कारे सवाब में शर्म नहीं चाहिए। बल्कि बिलएलान कव्वा खाना चाहिये। मुफ्त में हम खुर्मा व हम सवाब। मुर्ग तो मुबाह ही है मगर कव्वा खाने पर जब सवाब मिलता है तो उल्माए देवबंद की दावत में कव्वा ही पेश करना चाहिये ताकि हम खुर्म व हम सवाब दोनों बातें हासिल हों।

सवाल नम्बर 21 क्या कोई ऐसी किताब है जिसका रखना और पढना और उस पर अमल करना उल्माए देवबंद के नजदीक ऐने इस्लाम और बाइसे सवाब है।

जवाब नम्बर 21 हां वो किताब मौलवी इस्माईल देहलवी की तकवेयतुल ईमान है। उसका रखना देवबंदी मजहब में ऐने इस्लाम है जैसा कि मौलवी रशीद अहमद साहब ने लिखा है।

हवाला नम्बर 21 फतावए रशीदिया हिस्सा तीसरा सफा 50 उसका यानी तकवेयतुल इमान का रखना पढना और अमल करना ऐने इस्लनाम और मौजिब अज्र का है।

फाएदा-जब तकवेयुतल इमान का रखना और पढना ऐने इस्लाम है तो जरूरी कि जिस शख्स ने तकवेयतुल इमान न पढी और जिसने अपने पास न रखी वो शख्स इस्लाम से खारिज है जिसका लाजमी नतीजा है कि तकवेयतुल ईमान के लिखने और छपने से पहले कोई शख्स भी मुसलमान न था और छपने के बाद

बल्कि इस वक्त भी अगर उस मेयार से मुसलमानों को जांचा जाय तो कम अज कम पच्चानवे फीसदी मुसलमान इस्लाम से खारिज हो जायेंगे।

मुसलमानों-मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही की इस कुफ्री मशीन को देखो कि अहले सुन्नत को मुशरिक बनाते बनाते उन्होंने खुद अपने हम मजहबों को भी जिन के पास तकवेयतुल इमान नहीं है या उस किताब को जिन्होंने पढा नही। काफिर कहने लगे। गंगोही साहब के मजहब में तकवेयतुल ईमान का मरतबा कुरआन मजीद से जाएद ठहेरता है। मुसलमानों के लिए ये बेशक जरूरी चीज है कि कुरआन मजीद पर इमान लाऐं मगर उसका रखना या पढना ऐने इस्लाम नहीं। क्योंकि जिस मुसलमान के घर कुरआन मजीद न हो या जिसने कुरआन नहीं पढा है वोह भी मुसलमान है मगर गंगोही साहब के नजदीक जो तकवेयतुल ईमान नहीं रखता है और नहीं पढता है। वो मुसलमान नहीं। लाहौलावला कुवता इल्ला बिल्लाह।

सवाल नम्बर 22: उल्माए देवबंद के नजदीक वहाबी किस को कहते हैं ?

जवाब नम्बर 22: आला दर्जे के दीनदार और मुत्तबए सुन्नत को वहाबी कहते हैं। जैसा कि उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब फरमाते हैं।

हवाला नम्बर 22: फतावए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 11 इस वक्त और इन अतराफ में वहाबी मुत्तबए सुन्नत और दीनदार को कहते हैं।

फाएदा: फिर वहाबी कहनें से देवबंदी क्यों चिड़ते हैं। क्या दीनदार और मुत्तबए सुन्नत होना बुरा मालूम होता है।

सवाल नम्बर 23: इब्ने अब्दुल वहाब नजदी के मुतअल्लिक उल्माए देवबंद का क्या अकीदा है। उसको कैसा जानते हैं।

जवाब नम्बर 23: बहुत अच्छा, उमदा आदमी, मुत्तबए सुन्नत आमिल बिदअत का मिटाने वाला। उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब ने इस नजदी की बड़ी तारीफ की है मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 23: फतावए रशीदिया हिस्सा दूसरा सफा 79 सवाल अब्दुल वहाब नजदी कैसे शख्स थे। अलजवाब मोहम्मद बीन अब्दुल वहाब को लोग वहाबी कहते हैं। वो अच्छा आदमी था सुना है मजहबे हंबली रखता था। आमिल बिलहदीस था। बिदअत व शिर्क से रोकता था मगर तशदीद (सख्ती) उसके मेजाज में थी वल्लाहो तआला आलम।

फाएदा: उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब ने नजदी वहाबी की

तारीफ करके साबित कर दिया और जाहिर कर दिया कि उल्माए देवबंद वहाबी है और नजदी के हम अकीदा हैं। नजदियों के जो अकाएद है। वही देवबंदियों के भी अकीदे हैं। अलबत्ता फर्क सिर्फ इतना है कि नजदी हंबली मजहब रखता था और देवबंदी हनफी और ये फकत आमाल का फर्क हुआ अकाएद में दोनों एक ही है।

सवाल नम्बर 24: उल्माए देवबंद के नजदीक मौलवी इस्साईल देहलवी मुसन्निफ तकवेयतुल ईमान व सिराते मुस्तकीम कैसे शख्स हैं।

जवाब नम्बर 24: मौलवी इस्माईल देहलवी आला दर्जा के मुत्तकी, परहेजगार, शहीद वली अल्लाह थे। उल्माए देवबंद के नजदीक मौलवी इस्माईल की विलायत कुरआन मजीद से साबित है। चुनानचे मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही ने अपने फतावा में लिखा है।

हवाला नम्बर 24: फतावए रशीदिया हिस्सा तीसरा सफा 49 इन औलियाउहू इल्लल मुत्तकून- कोई नहीं औलिया हक तआला का सिवाए मुत्तकियों के बमौजिब इस आयत के मौलवी इस्माईल वली हुए। इसके बाद हदीस से मौलवीं इस्माईल की शहादत भी साबित की हैं।

फाएदा : अकीदत इसी को कहते हैं । कुरआन व हदीस से मौलवी इस्माईल को वली व शहीद बना डाला। मगर हजरत गौस पाक रदिअल्लाहो अन्हो वगैरा औलियाए केराम के लिए कभी ऐसी तकलीफ गवारा न हुई। उनकी ग्यारवीं और फातेहा को भी शिर्क व बिदअत कहते-कहते उमर गुजार दी।

सवाल नम्बर 25: जब उल्माए देवबंद के नजदीक मौलवी इस्माईल देहलवी की विलायत व शहादत कुरआन व हदीस से साबित है तो उनके कौल को उल्माए देवबंद भी जरूर मानते होंगे। हमने सुना है कि मौलवी इस्माईल देहलवी ने लिखा है कि नमाज में नबीएकरीम अलैहिस्सलातो व त्तसलीम का ख्याल आना गधे और बैल के ख्याल में डूब जाने से बदरजहा बदत्तर है। और इससे नमाजी शिर्क की तरफ चला जाता है। क्या ये बात सही है। और मौलवी इस्माईल ने किसी किताब में ऐसा लिखा है।

जवाब नम्बर 25: मौलवी इस्माईल के कौल को मानना क्या। बल्कि उनकी किताबों का रखना, उन पर अमल करना उल्मा ए देवबंद के नजदीक ऐने इस्लाम है। जैसा कि हवाला नबंर 21 में गुजरा और ये बात सही है। मौलवी इस्माईल देलहवी ने अपनी किताब सिराते मुस्तकीम में लिखा है कि नमाज में हुजूरे

अकरम का ख्याल लाना अपने गधे और बैल के ख्याल में डूब जाने से बदरजहा बदतर है और हुजूर का ख्याल चूंकि ताजीम के साथ आता है। लेहाजा शिर्क की तरफ खींच ले जाता है मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 25: सिराते मुस्तकीम सफा 86 सर्फ हिम्मत बसूए शेख व अमसाले आं अज मो अज्जमीन गो जनाबे रिसालत मआब बाशंद बचंदी मरतबा बदतर अज ईस्तगराके दर सूरते गांव खरखुद अस्त कि खयाल आं बा ताजीम व इजलाल बसुएदाए दिले इन्सान मी चस्पद चखेलाफे खेयाले गांव खर कि न ओं कद्र चस्पीदगी मी बुवद व न ताजीम बल्कि महानो महकर मीबूवद व ई ताजीमें इजलाल गैर कि दर नमाज मलहूज व मजसूद मीशवद ब शिर्क मी कुशद।

सवाल नम्बर 26: जब उल्माए देवबंद के नजदीक इस्माईल देहलवी का कौल मोतबर हुवा तो अब उनके नजदीक नमाज पढ़ने की क्या सूरत होगी। इसलिए कि नमाज में हुजूर का जिक्र है और ताजीम ही के साथ है। नमाज में कुरआन मजीद पढ़ना फर्ज है। इसमें भी हुजूर की तारीफ व तौसीफ और जिक्र है। खासकर अत्तहिय्यात में हुजूर पर सलाम भेजा जाता है और शहादत पेश की जाती है। उस वक्त तो जरूर आप का ख्याल आता है तो देवबंदी मजहब में और हर उस शख्स के नजदीक को इस्माईल देहलवी को मानता है नमाज पढ़ने का क्या तरीका होगा। आया नमाज के दूरूस्त होने की कोई सूरत निकल सकती है या नहीं।

जवाब नम्बर 26: वाकेआ तो यही है कि जब अत्तहिय्यात में नबीए करीम अलैहिस्सलातो व त्तसलीम पर नमाजी सलाम भेजेगा और आपकी रिसालत की शहादत देगा तो यकीनन आप का ख्याल जरुर नमाजी के दिल में आएगा। ये कैसे हो सकता है कि किसी को सलाम किया जाए और उसका ख्याल दिल में न आवे बल्कि सलाम करने से पहले ही दिल में ख्याल आता है। लेहाजा अत्तहिय्यात पढ़ते वक्त हुजूर सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम का खयाल आना तो जरूरी हुवा। अब ख्याल की दो ही सूरतें है। ताजीम के साथ आएगा या तहकीर के साथ। अगर ताजीम के साथ हुजूर का ख्याल आया तो बकौल मौलवी इस्माईल देहलवी शिर्क की तरफ खींच गया। कहां कि नमाज और अगर हेकारत के साथ हुजूर का खयाल आया तो यकीनन कुफ्र हुआ फिर कैसी नमाज। क्योंकि नबी की हेकारत कुफ्र है। अब इस कुफ्र से शिर्क से

बचने के लिए तीसरी सूरत ये है कि अत्तहियात ही न पढे। मगर मुसीबत ये है कि अत्तहियात पढ़ना नमाज में वाजिब है और वाजिब के कसदन तर्क से नमाज पूरी नहीं होती। लेहाजा अत्तहिय्यात न पढ़ने से नमाज पूरी नहीं होगी खुलासा ये हुआ कि इस्माईल देहलवी के इस कौल की बिना पर नमाजी अत्तहियत पढेगा तो नमाज नहीं होगी। इस्माईल के मजहब पर नमाज को किसी सूरत में होगी ही नहीं। अलबत्ता फर्क इतना होगा कि अत्तहिय्यात न पढ़ने कीसूरत में शायद कुफ्र व शीर्क से बच जावे।

फाएदा: क्या मजे की बात है कि किसी सूरत में नमाज पूरी नहीं हो सकती। वजह ये है कि सिराते मुस्तकीम की इस नापाक इबारत में नबीए करीम सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम की सख्त तौहीन है। क्योंकि हुजूर के ख्याल को गधे और बैल के ख्याल में डूब जाने से बदरजहा बदतर बताया है। इसी तौहीन का वबाल है कि ख्वाह अत्तहियात पढ़े या न पढ़े मगर नमाज तो किसी सूरत में पूरी होती ही नहीं।

सवाल नम्बर 27: हमने सुना है कि मौलवी अश्रफ अली साहब थानवीं किसी से मुराद मांगने को और किसी के सामने झुकने को कुफ्र व शीर्क कहते हैं। इसी तरह अली बख्श, हुसैन बख्श, अब्दुन्नी बगैरा नाम रखने को शिर्क व कुफ्र बताते हैं। और किसी को दूर से पुकारना और ये समझना कि उसे खबर हो गई उसको भी शिर्क व कुफ्र ही कहते हैं। क्या ये बात सच है। क्या वाकई मौलवी अश्रफ अली साहब इन बातों को शिर्क व कुफ्र कहते हैं। मुसलमानों की अकसरियत इन अफआल अकवाल की मुरतकिब हैं। अगर थानवी साहब के नजदीक ये सब बातें कुफ्र व शिर्क है। तो उनके नजदीक हिन्दुस्तान के करोड़ों मुसलमान काफिर व मुश्रिक है।

हमारी समझ में नहीं आता कि मौलवी अश्रफ अली साहब इतने बड़े आलिम इन बातों को शिर्क बताकर करोड़ों मुसलमानों को इस्लाम से खारिज कर दें। लिहाजा सही वाकेआ हवाले के साथ बयान किया जाए।

जवाब नम्बर 27: बिला शुब्हा मौलवी अश्रफ अली साहब मुराद मांगने को, किसी के सामने झुकने को, सेहरा बांधने को, अली बख्श हुसैन बख्श, अब्दुन्नबी वगैरा नाम रखने को कुफ्र व शिर्क कहते हैं। किसी को दूर से पुकारना और ये समझना कि उसे खबर हो गई। यूं कहना कि खुदा व रसूल चाहे तो फलां

काम हो जाएगा इन सब बातों को थानवी साहब कुफ्र व शिर्क ही बताते हैं। चुनानचे उन्होंने अपनी किताब बेहिश्ती जेवर के पहले ही हिस्सा में इसमें से हर हर बात को कुफ्र व शिर्क लिखा है। हवाला मुलाहेजा हो।

हवाला नम्बर 27: बेहिश्ती जेवर हिस्सा अव्वल सफा 45 पर है। कुफ्र व शिर्क की बातों का बयान इसी में है। किसी को दूर से पुकारना और ये समझना कि उसको खबर हो गई। किसी से मुरादे मांगना। किसी के सामने झुकना इसी में सफा 46 पर है। सेहरा बांधना, अली बख्श , हुसैन बख्श, अब्दुन्नबी वगैरा नाम रखना। यूं कहना कि खुदा व रसूल अगर चाहे तो फलाना काम हो जाएगा।

फायदा: जब ये सब बातें कुफ्र व शिर्क हुए तो उनके करने वाले मौलवी अशरफ अली साहब के नज़दीक काफिर व मुशरिक हुए यानी जिस ने मुराद मांगी वो काफिर व मुशरिक। जो किसी के सामने झुक गया वो काफिर व मुशरिक । जिसने सेहरा बांध लिया वो काफिर व मुशरिका जिसने अली बख्श , हुसैन बख्श, अब्दुन्नबी वगैरा नाम रखा वो काफिर व मुशरिफ। किसी को दूर से पुकारा और ये समझ लिया कि उसे खबर हो गई वो काफिर व मुशरिक। जिसने ये कहा कि खुदा व रसूल अगर चाहे तो फलाना काम हो जाएगा वो काफिर व मुशरिक।

मुसलमानों । जरा गौर करो और बताओ कि ये छ: बातें जिन को थानवी साहब ने कुफ्र व शिर्क लिखा है। इनमें से तुमने कोई बात की तो नहीं। अगर इनमें से एक बात भी तुम से हुई है तो थानवी साहब के नजदीक तुम काफीरो मुश्रीक हो। तुम चाहे कितना ही कहो कि हम मुसलमान है। मगर थानवी साहब का हुक्म है कि तुम काफिर व मुशरिक ही हो। मेरे ख्याल में अगर थानवी साहब कि इस मेयार से मुसलमानों को जांचा जाय तो मुश्किल से फिसदी पांच मुसलमान निकलेंगे और पंचानबे फिसदी (95प्रतिशत) मुसलमान दाएर-ए-इस्लाम से खारिज होकर काफिर व मुशरिक हो जाएंगे। मौलवी अशरफ अली साहब ने इन चीजों को कुफ्र व शिर्क लिखकर गोया मुसलमानों को काफिर बनाने की मशीन तैयार की है जिसने तकरीबन पंच्चानबे (95 प्रतिशत) फीसदी मुसलमानों को काफिर व मुशरिक बना दिया। थानवी साहब जरा घर की खबर ले। और अपने बड़े पेशवा मौलवी गंगोही साहब का नसब नामा देखें। तजके रतुर्रशीद सफा 13 में गंगोही साहब का पिदरी नसब नामा ये है।

रशीद अहमद बिन हिदायत अहमद बिन पीर बख्श बिन गुलाम हुसैन बिन गुलाम अली और मादरी नसब ये हैं रशीद अहम बिन करीमुन्निसा बिन्ती फरीद बख्श बिन गुलाम कादिर बिन मोहम्मद सालेह बिन गुलाम मोहम्मद। गौर कीजिए कि गंगोही साहब के दादा नाना में कितने ऐसे हैं जो थानवी साहब के हुक्म से मुशरिक । अब खुद ही बताएं कि गंगोही साहब इनके नजदीक क्या हैं।

इस घर को आग लग गई घर के चिराग से।

इस बात से तअज्जुब तो जरुर होता है कि मौलवी अशरफ अली साहब ने ऐसा क्यों किया। मगर जब उनके अकीदे की तरफ नजर की जाए तो कोई तअज्जुब की बात नहीं। वहाबियों का अकीदे की तरफ नजर की जाए तो कोई तअजुब की बात नहीं। वहाबियों का अकीदा ही ये हैं कि सिवाए उनकी मुख्तसर जमात के सारी दुनियां के मुसलमान उनके नजदीक काफिर व मुशरिक है। लेहाजा ये उनके अकीदे का मसअला है कि वो अपनी जमात के अलावा सारी दुनियां के मुसलमानों को काफिर मुशरिक समझते हैं। जैसा कि अल्लामा शामी रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया रद्दुलमोहतार जिल्द 3 सफा 319 (तर्जुमा)

जैसा हमारे जमाने में अब्दुल वहाब के मुत्तेबेईने में वाके हुवा जो नज्द से निकलकर हरमैन शरीफैन पर काबिज हुए और अपने आपको हंबली मजहब जाहिर करते थे। लेकिन दर अस्ल उनका ऐतेकाद ये था कि मुसलमान सिर्फ वही है बाकी सब मुशरिक हैं। इसी वजह से उन्होंने अहले सुन्नत और उनके उल्मा का कत्ल जाएज समझा। यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनकी शौकत तोड़ी और उनके शहर वीरान किये. और इस्लामी लश्करों को उन पर फतह दी 1233 हिजरी में। अल्लामा शामी ने तसरीह फरमा दी कि वहाबियों का अकीदा है कि वो अपने सिवा तमाम दुनिया के मुसलमानों को काफिर व मुशरिक ही जानते हैं और उल्माए देवबंद नजदियों वहाबियों के हम अकीदा हैं। चुनानचे उल्माए देवबंद के पेशवा मौलवी रशीद अहमद साहब ने अपने फतावए रशीदिया में मोहम्मद बीन अब्दुल वहाब नजदी की बहुत तारीफ की है। उसको मुत्तबए सुन्नत, आमिल बिल हदीस, शिर्क वो बिदअत से रोकने वाला लिखा है मुलाहेजा हो हवाला नम्बर 23 - नतीजा ये निकला कि उल्माए देवबंद अपने सिवा सारी दुनियां के मुसलमानों को काफिर व मुशरिक जानते हैं और उन्हीं नज़दियों के हम अकीदा हैं जो मुसलमानो को अहले

सुन्नत व उल्माए अहले सुन्नत के कत्ल को जाएज समझते हैं। अगर चे इस वक्त फरेब देने के लिए और मुसलमानों को फसाने के लिए अहले सुन्नत बनते हैं और अपने को अहले सुन्नत लिखने लगे मगर ये फरेब कारी कैसे काम आ सकती है। मौलवी रशीद अहमद साहब ने नजदी की तारीफ करके साबित कर दिया कि उल्माए देवबंद पक्के वहाबी और नजदियों के हम अकीदा है। हरगिज अहले सून्नत नहीं बल्कि अहले सुन्नत के दुश्मन उनके खून के प्यासे हैं। खुदा-ए-तआला मुसलमानों को काफिर व मुशरिक कहने वाला कौन है। उससे क्या तअलुक रखना चाहिए।

फायदा: मौलवी अश्रफ अली साहब ने अब्दुलन्नबी नाम रखने को शिर्क कहा। जिसका सबूत हवाला नंबर 27 में गुजरा और उनके पीर हाजी इमदादुल्लाह साहब मोहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह शमाएमे इमदादिया में फरमाते हैं कि इबादुल्लाह को इबादे रसूल (खुदा के बंदो को रसूल का बन्दा) कह सकते हैं।

जिससे साफ जाहिर है कि अब्दुन्नबी नाम रखना जाएज है। यानी जिसको थानवी साहब शिर्क कह रहे हैं उसी को उनके पीर हाजी इमदादुल्लाह साहब जाएज फरमा रहे हैं अगर हाजी इमदादुल्लाह साहब का कौल सही है तो अब्दुन्नबी नाम रखना जाएज हुवा। हालांकि मौलवी अश्रफ अली साहब उसे शिर्क कह रहे हैं। मुसलमानों बताओ जाएज को शिर्क कहने वाला कौन है और अगर थानवी साहब का कौल सही माना जाए तो तो अब्दुन्नबीन नाम रखना शिर्क हुवा उसी को हाजी इमदादुल्लाह साहब जाएज फरमा रहे हैं अब बताओ शिर्क को जाएज कहने वाला कौन है पीर वो मुरीद दोनों में से किसी एक का तो हुक्म बताओ। क्या बताओगे ये वज्जात वहाबियत के करिश्मा है। सावन के अन्धे की तरह हर चीज में शिर्क ही नज़र आता है।

सवाल नम्बर 28: नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को जो अल्लाह रब्बुल इज्जत ने बाज इल्मे गैब अता फरमाया तो क्या ऐसा इल्मे गैब उल्माए देवबंद के नजदीक बच्चों पागलों जानवरों को भी हासिल है। क्या उल्माए देवबंद में से किसी ने ऐसा लिखा है।

जवाब नम्बर 28: उल्माए देवबंद के नजदीक ऐसा इल्म गैब तो हर जैदो अमर बल्कि हर बच्चे और हर पागल और तमाम हैवानों को भी हासिल है। देवबंदियों के पेशवा मौलवी अश्रफ अली साहब थानवी ने अपनी हिफजुल ईमान में लिखा

है मुलाहिजा हो।

हवाला नम्बर 28: हिफजुल ईमान सफा 8 फिर से ये आप की जाते मुकद्देसा पर इल्मे गैब का हुक्म किया जाना अगर बकौल जैद सही हो तो दर्याफ्त तलब ये अम्र है कि इस गैब से मुराद बाज गैब हैं या कुल। अगर बाज़ उलुमे गैबिया मुराद हैं तो इसमें हुजूर की क्या तखसीस है। ऐसा इल्म गैब तो जैदो अमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीं हैवानात व बहाएम के लिए भी हासिल है।

फाएदा: इस इबारत में मौलवी अश्रफ अली साहब ने इल्मे गैब की दो किस्मे की। कुल और बाज। कुल को तो बाद में अकलन व नकलन बातिल किया और न हुजूर के लिए कोई कुल मानता। रहा बाज इल्मे गैब। वो यकीनन हुजूर का इल्म है उसी इल्मे नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को पागलों और जानवरों के इल्म से तशवीह दी। जिसमें नबी ए करीम अलैहिस्सलातो व त्तसलीम की सख्त तौहीन है। बाज अकीदतमंद लोग महेज तरफदारी में कह दिया करते हैं कि इस इबारत में नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तौहीन नहीं है। मगर ये महेज अश्रफ अली साहब की खुली तरफदारी है। इसलिए कि अगर यही इबारत मौलवी अश्रफ अली साहब के लिए बोल दी जाए और यूं कहा जाए कि मौलवी अश्रफ अली साहब की जात पर इल्म का हुक्म किया जाना अगर बकौल जैद सही हो तो दर्याफ्त तलब ये अम्र है कि इस इल्म से मुरादबाज इल्म है या कुल अगर बाज उलूम मुराद है तो इसमें मौलवी अश्रफ अली साहब की क्या तखसीस है। ऐसा इल्म तो जैदो अमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमी हैवानात व बहाएम के लिए भी हासिल है तो यकीनन तो तरफदार लोग भी जामे से बाहर हो जाते हैं। और कह देते हैं कि इसमें मौलवी अश्रफ अली साहब की तौहीन है हालांकि बिल्कुल वही इबारत है जो अश्रफ अली साहब ने हुजूर के लिए लिखी है। सिर्फ नाम का फर्क है और हिफजुल ईमान की इबारत की जिस कद्र ताविलें की गई है तो सब इसमें जारी है। मगर फिर भी कहते हैं कि थानवी साहब की तौहीन हैं। मुसलमानों गौर करो। जिस इबारत में मौलवी अश्रफ अली साहब की तौहीन हो वही इबारत हुजूर के लिए बोली जाए तो हुजूर की तौहीन नहीं। इसका साफ मतलब ये है कि वो तरफदार लोग अपने नजदीक हुजूर का मर्तबा मौलवी अश्रफ अली साहब के बराबर भी नहीं मानते वरना कोई वजह नहीं कि जिस बात में थानवी साहब की तौहीन हो इसमें हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे

वसल्लम की तौहीन न हो। गजब है। हैरत है। इस तरफदारी की कोई इन्तेहा है। नबी के मुकाबले में थानवी जी की ऐसी खुली तरफदारी-शेर-

बवक्ते सुबह शवद हम चूं रोजे मालूमत।
के बाके बाख्ताए इश्क दर शबे दैजूर॥

मगर मौलवी अशरफ अली साहब खूब समझते हैं कि इस इबारत हिफजूल ईमान में नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तौहीन है। इसी वजह से आज तक उल्माए अहले सुन्नत के मुकाबले में मुनाजरे के लिए आने तक की भी ताब न ला सके। शख्सियत परस्ती के नशे में तौबा भी मयस्सर न हुई। अकीदतमंद लोग उनकी तरफदारी में कुछ उछले कूदे। मगर इस मुकदमे में जान ही नहीं। करें तो क्या करें। इसलिए जहां जाते हैं जलील होते हैं और क्यों न हों। हिफजूल ईमान की इस इबारत का तौहीन होना आफताब से ज्यादा रौशन है उसकी तरफदारी में जो कुछ कहा जाएगा वो कुफ्र की हिमायत है और कुफ्र की हिमायत में सिवाए जिल्लत व रूसवाई के और क्या हो सकता है मौला तआला तौबा की तौफीक दे।

सवाल नंबर 29 :- क्या उल्माए देवबंद के नजदीक उम्मती अमल में नबी के बराबर हो सकता है।

जवाब नंबर 29 :- हां उल्माए देवबंद का यही अकीदा है कि उम्मती अमल मेंनबी के बराबर हो सकता है बल्कि नबी से बढ़ सकता है। चुनांचे उल्माए देवबंद के पेशवा बानी मदरसा देवबंद मौलवी मोहम्मद कासिम साहब नानौतवी तहरीर फरमाते हैं।

हवाला नंबर 29 :- तहजीरुन्नास मुसन्नेफा मौलवी मोहम्मद कासिम सफा 5-अम्बिया अपनी उम्मत से अगर मुमताज होते हैं तो उलुम ही में मुमताज होते हैं बाकी रहा अमल। उसमें बसा औकात बजाहिर उम्मती मसावी हो जाते हैं बल्कि बढ़ जाते हैं।

फाएदा :- मुसलमानों ये हैं अकीदा उल्माए देवबंद का। अमल में नबी को उम्मती पर कोई फजीलत नहीं मानते। अमल में उम्मती को नबी के बराबर करते हैं। बल्कि बढ़ाते हैं। उन्होंने इल्म में फजीलत दी थी। मगर थानवी साहब ने उसे भी उड़ा दिया। कह दिया कि ऐसा इल्म तो पागलों जानवरों को भी है। मुलाहेजा हो हवाला नंबर 28

सवाल नंबर 30 :- उल्माए देवबंद के नजदीक नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे

वसल्लम का इल्म ज्यादा है या शैतान का। हुजूर का इल्म कुर्आन हदीस से साबित है या शैतान अलैहिल लआन का।

जवाब नंबर 30 :- उल्माए देवंबद के नजदीक हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इल्म ज्यादा है। और शैतान के इल्म की ज्यादती कुर्आन वो हदीस से साबित है। और हुजूर की उसअते इल्म (इल्म की जियादती) के लिए उनके नजदीक कोई नस्से कतई (कुर्आनी आयत) नहीं। चुनानचे मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी और मौलवी रशीद अहमद साहब गंगोही अपनी किताब में तहरीर फरमाते हैं।

हवाला नंबर 30 :- बराहीने कातिआ मुसन्नेफा मौलवी खलील अहमद अम्बेठवी मुसद्देका मौलवी रशीद अहमद गंगोही सफआ 51- अलहासिल गौर करना चाहिए कि शैतान वो मलकुलमौत का हाल देखकर इल्मे मोहीते जमीन का फखरे आलम का खेलाफे नसूसे कतइय्या के बिला दलील महज कयासे फासेदा से साबित करना शिर्क नहीं तो कौन सा ईमान का हिस्सा है शैतान व मलकुलमौत को ये उसअत नस (कुर्आन) से साबित हुई। फखरे आलम की उसअते इल्म की कौन सी नस्से कतई है जिससे तमाम नोसूस को रद करके एक शिर्क साबित करता है।

तंबीह :- मुसलमानों गौर करो। मौलवी खलील अहमद साहब व मौलवी रशीद अहमद साहब पेशावाए उल्माए देवबंद ने सारी जमीन का इल्म हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए तो शिर्क कहा मगर उसी शिर्क को शैतान के लिए नेहायत खुशी के साथ नस से साबित माना। शैतान मर्दूद से ऐसी खुश अकीदगी और हुजूर से ऐसी अदावत। इसी अदावत ने तो अक्ल को रुखसत कर दिया। ये भी समझ में न आया कि हुजूर के लिए जिस इल्म का साबित करना शिर्क है वो शैतान के लिए कैसे ईमान हो सकता है और वो भी नस से यानी कुर्आन व हदीस से। कहीं कुर्आन व हदीस से भी शिर्क साबित होता है। ये शैतान से अकीदतमंदी है कि उसके इल्म को हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के इल्म से बढ़ा दिया।

मुसलमानों। इंसाफ करो और बिला रेआयत कहो क्या इसमें हुजूर की तौहीन नहीं है। है और जरूर है। और अगर कोई तरफदार शख्सियत परस्त न माने तो उसी को कहो कि ओ इल्म में शैतान के बराबर या तेरा फला मौलवी इल्म में शैतान के बराबर है। देखो जामा से बाहर हो जाएगा। हालांकि उसको बराबर ही

कहा है और अगर किसी देवबंदी मौलवी को शैतान के मुकाबिल घटा दिया जाए तो मालूम नहीं कहां तक नौबत पहुंचे। मुसलमानों शरीअते मुतहहेरा का हुक्म है कि जिसने किसी मखलूक को हुजूर नबी ए करीम अलैहिस्सलातो व त्तसलीम से इल्म में ज्यादा कहा वो शख्स काफिर है। शफा शरीफ की शरह नसीमुर्रेयाद में फरमाया।(तर्जुमा)

जिस किसी ने कहा के फला को नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की सख्त तौहीन है फिर उसके कुफ्र में क्या शुब्हा है।

फाएदा :- मौलवी मुर्तुजा हसन दरभंगी ने इस कुफ्री इबारत की तावील में ये कहा कि इस इबारत में जो हुजूर के लिए उसअते इल्म शिर्क बताई हैं और जिस इल्म की नफीं की है वो इल्म जाती है और जाती इल्म हुजूर के लिए साबित करना शिर्क है।

मगर अफसोस कुफ्र की हिमायत में उनकी अक्ल ही रुखस्त हो गई। ये भी न समझे कि इल्म जाती की नफी का बहाना तो उस वक्त हो सकता था जब उनके खस्म (मुखालिफ) हुजूर के लिए इल्म जाती साबित करते। जब मुकाबिल इल्म अताई साबित कर रहा है तो जाती की नफी करना यकीनन मजनून की बड़ होगी और मौलवी खलील अहमद साहब पागल ठहरेंगे। नीज बराहीने कातिआ की ये कुफ्री इबारत पुकार कर कह रही है कि जिस किस्म का इल्म शैतान के लिए साबित माना है उसी किस्म के इल्म की हुजूर से नफी की है लेहाजा अगर हुजूर से इल्म जाती की नफी की है तो यकीनन शैतान के लिए इल्म जाती, माना जो खुला हुवा शिर्क है। इसमें मौलवी खलील अहमद साहब मुशरिक ठहरेंगे। गर्ज की मौलवी मुर्तजा हसन साहब ने बराहीने कातिआ की इस इबारत में हुजूर से इल्म जाती की नफी बताकर बराहीने के मुसन्निफ व मुसद्दिक को मजनून व मुशरिक बना दिया। ये हुजूर की तौहीन का वबाल है कि तरफदारी की जाती है तब भी मजनून या पागल जरूर ठहरते हैं खुदावंद तआला तौबा की तौफीक दे कि कुफ्र की हिमायत से तौबा करें और हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के मर्तबे को पहचानें और जानें के हुजूर के मुकाबले में किसी की तरफदारी काम न आएगी।

फाएदा :- मौलवी कासिम साहब नानौतवी बानी मदरसा देवबंद ने सारे अम्बियां अलैहे मुस्सलाम को अमल में घटा दिया और उम्मतियों को अमल में

अम्बिया से बढ़ाया जैसा कि हवाला नंबर 29 में गुजरा और मौलवी खलील अहमद साहब व मौलवी रशीद अहमद ने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से इल्म में शैतान को बढ़ाया जिसका सबूत हवाला नंबर 30 में गुजरा। खुलासा ये हुवा कि उल्माए देवबंद ने मुत्तफिक होकर अम्बियां अलैहे मुस्सलाम खुसूसन सय्यदुल अम्बियां जनाब मोहम्मदुर्रसुलूल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इल्म और अमल दोनों फजीलतों में उम्मती और शैतान से घटाया है। मुसलमानों आंखें खोलो और इंसाफ करो और उल्माए देवबंद की हकीकत पहचानो अगर तुमको अपने रसूल, अपने नबी, अल्लाह के महबूब, जमाने मोहम्मदुर्रसूलुल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सच्ची मोहब्बत है तो इस पर मुत्तला होने के बाद उनके गुस्ताखों से बेजारी, बेतअल्लुकी इख्तियार करो। अपने नबी की ऐसी खुली हुई तौहीन करने से इलाका बाकी रखना उम्मती का काम नहीं हो सकता। तुम्हीं फैसला करो कि इतनी खुली तौहीन के बाद भी अगर ईमान गैरत न आए और गुस्ताखी की तरफदारी और हेमायत में बेजा तावीलें की जाएं तो क्या नबी से अदावत और दुश्मनी नहीं है। वाकई ऐसे गुस्ताख की तरफदारी नबी की दुश्मनी और नबी का मुकाबला है। अयाज बिल्लाह (खुदा की पनाह)

बिरादराने इस्लाम की खिदमात में मुखलेसाना गुजारिश

बिरादराने इस्लाम। प्यारे भाईयों। दुनिया चन्द रोजा है इसकी राहत वो मुसीबत सबफना होने वाली है। यहां की दोस्ती और दुश्मनी खत्म होन वाली है। दुनिया चले जाने के बाद बडे से बडा रफीक व शफीक भी काम आने वाला नहीं। बाद मरन के सिर्फ खुदा और उसके रसूल जनाब मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ही काम आने वाले हैं। सफरे अखिरत की पहली मंजील कब्र है। उसमें मुनकरनकीर आकर सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है और तेरा दीन क्या है। उसी के साथ नबी ए करीम रउफ र्रहीम जनाबे मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सलल्लाहो अलैह वसल्लम के मुतअल्लिक मुर्दे से दर्याफ्त करते हैं। हुजूर की तरफ इशारा करके पूछते हैं कि इनकी शान में क्या कहता है। अगर उस शख्स को नबी ए करीम अलैह हिस्सलातो व तसलीम से अकीदत व मोहब्बत है तो जवाब देता है कि ये तो हमारे आका व मौला, अल्लाह के महबूब, जनाब मोहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हैं। इन पर तो हमारी इज्जत, आबरू,जानो माल सब कुर्बान। उस शख्स के लिए नजात है और अगर हुजूर से जर्रा बराबर कुदूरत है। दिल में आपकी अजमतो मोहब्बत नहीं है। जवाब नहीं द सकेगा। यही कहेगा। मैं नहीं जानता। लोग जो कहते थे मैं भी कहता था। उस पर सख्त अजाब और जिल्लत की मार है। अयाज बिल्लाह खुदा की पनाह मालुम हुवा कि हुजूर की मोहब्बत मदारे ईमान,मदारे नजात है। मगर ये तो हर मुसलमान बडे जोर से दावा के साथ कहता है कि हम हुजूर से मोहब्बत रखते हैं। आपकी अजमत हमारे दिल में है। लेकिन हर दावा के लिए दलील चाहिए और हर कामयाबी के लिए इम्तेहान होता है। नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मोहब्बत का दावा करने वालों का ये इम्तेहान है कि जिन लागों ने नबी ए करीम अलैहिस्सलातो व तसलीम की शाने अकदस में गुस्ताखीयां और बेअदबियां की हैं। उसने अपना तअल्लुक तोड कर ऐसे लोगों से नफरत और बेजारी जाहिर करें। अगरचे वो मां बाप और औलाद ही क्यों न हों। बडे बडे मौलाना पीर व उस्ताद ही क्यों न हों। लेकिन जब उन्होंने हुजूर की शान में बेअदबी की तो ईमान वालों का उनसे कोई तअल्लुक बाकी नहीं रहा। अगर कोई शख्स उनकी बेअदबियों पर मुत्तेलअ हो जाने के बाद फिर भी उनकी इज्जत,उनका एहतराम करे और अपनी रिश्तेदारी या उनकी शख्सियत और मौलवीयत के लेहाज से नफरत व बेजारी जाहिर न करे वो शख्स इस इम्तेहान में नाकामयाब हैं। उस उस शख्स को हकीकतन हुजूर की मोहब्बत नहीं। सिर्फ जबानी दावा है।

अगर हुजूर की मोहब्बत और सच्ची अजमत होती तो ऐसे लोगों की इज्जत व अजमत उनसे मेल वो मोहब्बत के क्या माने खूब याद रखो। पीर और उस्ताद, मौलवी आलिम की जो इज्जत बुकअत की जाती है उसकी महेज यही वजह है कि हुजूरे अकदस सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से ताअल्लुक और निस्बत रखने वाला है। मगर जब उसने हुजूर की शान में बेअदबी और गुस्ताखी की। फिर उसकी कैसी इज्जत और उससे कैसा तअल्लुक उसने तो खुद हुजूर से अपना तअल्लुक तोड लिया।

फिर मुसलमान उससे अपना तअल्लुक क्यों कर बाकी रखेगा। ऐ मुसलमान तेरा फर्ज है कि अपने आका व मौला महबूबे खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इज्जत वो अजमत पर मर मिटे। उनकी मोहब्बत में अपना जान वो माल, इज्जत वो आबरू कुर्बान करने को अपना इमानी फर्ज समझे औरउनके चाहने वालों से मोहब्बत, उनके दुश्मनों से अदावत दुश्मनी लाजमी और जरूरी जाने । गौर कर। किसी के बाप को गाली दी जाए और बेटे को सुनकर हरारत न आ जाए तो वो सही मानें में अपने बाप का बेटा नहीं। इसी तरह अगर नबी की शान में गुस्ताखी हो और उम्मती सुन कर खामोश हो जाए। उस गुस्ताख से नफरत वो बेजारी जाहिर न करे तो ये उम्मती भी यकीनन सही मअना में उम्मती नहीं हैं। बल्के एक जबानी दावा करता है। जो हरगिज काबिले कुबूल नहीं। इस रेसाला में बअज लोगों के अकवाले गुस्ताखना जिमनन आ गए हैं। मुसलमान ठण्डे दिल से पढें और फैसला करें और अपनी सदाकते इमानी के साथ इंसाफ करें कि ऐसे लागों से मुसलमानों को क्या तअल्लुक रखना चाहिए। बिला रेआयत और बेगैर तरफदारी के कहना और ये भी याद रखना कि अगर किसी शख्सियत वो मौलवियत का लेहाज करते हुए उसकी रेआयत की तो नबी ए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का मुकाबला है। नबी के मुकाबले में नबी के गुस्ताख की तरफारी वो रेआयत तुम्हारे काम नहीं आ सकती।

वसल्लल्लाहो तआला अला खैरे खलकेही सैयदेना
मोहम्मदिव व आलेही व अस्हाबेहीअजमईन
बेरहमते का या अरहर्रहेमीन

खाकसार– अब्दुल अजीज खादेमुत्तलबा मदरसा अश्रफीया मिस्बाहुल उलूम
मुबारकपुर, जिला आजमगढ– यू पी